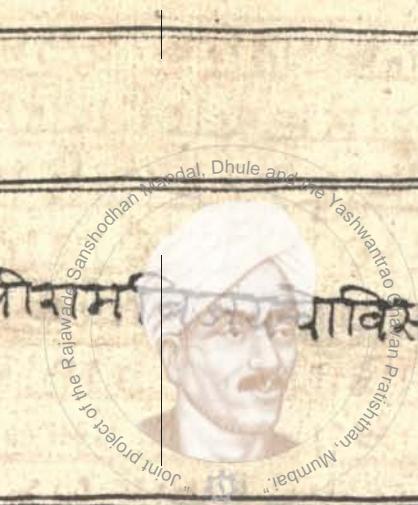


१८८१।०७।११

०

॥ श्री राम ॥

राविसावाजापारंभः ॥



॥श्रीराम॥

॥१॥

(2)

श्रीगणेशायनमः ॥ ककेनसमुद्राचाजोत्ता ॥ सांपउलजंबराचेंगणि
हा ॥ यादुनरामकथाजड़ता ॥ नलगेजंतकोणतिं ॥ १ ॥ चपकधांवेप्रभं
जन ॥ त्याच्चिमोटबांधवेलआकर्षुन ॥ परियारघुपतिचेगुण ॥ वर्णी
तांजंतनलगे ॥ २ ॥ सहस्रवद्देनकरन ॥ वर्णिकाइव्येकुकभुषण ॥ ने
लिनेतिल्पणोन ॥ आम्नाजेयंतहस्य ॥ ३ ॥ रघुविरगुणठेचीनिराक ॥
तेधेंव्यासवाल्मीकमराक ॥ उच्चनतिमाजीसकक ॥ देलाउठेंठे
गणें ॥ ४ ॥ तेहिगुणवर्णितांउपार ॥ अंतनलगेचिसाचार ॥ ते
धंमानवशालभपामर ॥ गुणावरकेवीक्रमी ॥ ५ ॥ तरिसांउनिअभी
मान ॥ वर्णिविरघुपतिचेगुण ॥ गंगानप्राइवेल्पणोन ॥ तृष्णोक्रांतेन
राठवे ॥ ६ ॥ तैसेचित्तावल्लभाचिगुण ॥ वर्णिवियथामतीकरन ॥ जसो

॥वीजय॥

॥१॥

पुर्वोध्याईनिरोपण॥ आलारघुनंदनसुवेक्षे ॥ ७॥ आत्मावाग्देविपर
 मतोऽक्षस ॥ उघुतिक्तुध्यकांउमाइस ॥ संतिलरत्नेविशेष ॥ माही
 कपंतितलयोच्च ॥ ८॥ रावणाचींदातिरुत्रें ॥ छेदुनीपातिलीं सौभी
 ॥ त्रें ॥ परमस्त्वानदाहिकगते ॥ सम्भव पन्तिविजाहालीं ॥ ९॥ सकक्षप्र
 धानासहीत ॥ वीचारिंबैसल तंकानाथ ॥ त्वरेमासेअंतरिंदोनहेत ॥
 केतेपुरतिनेणोमीं ॥ १०॥ रामकृष्णनगराकाली ॥ वस्यकाविजनकनेदी
 नी ॥ यवेगकेमास्त्रेमनि ॥ चींतु ॥ त्रिनसेची ॥ ११॥ तोंवज्रदीस्त्रील
 णेलंकनाथ ॥ शित्तेचीकांसपासीउधरिता ॥ बक्षेंचीआपुनितत्वता ॥
 कामनाजापुक्षीपुरवावि ॥ १२॥ मगबोलेदशकंदर ॥ मजविरंचीचा
 श्रापथोर ॥ परस्त्रीवरिकरितांबक्लार ॥ शालचुर्णत्रुञ्जठोयैपै ॥ १३॥

(2A)

॥श्रीराम॥

॥२॥

(3)

द

मुगपतिचेषु टकेनयन ॥ कीं व्याघ्रहस्तदकोलेषु दुन ॥ कीं चु जंगा ॥ ॥ विजय ॥
चेदंतपाउन ॥ केलादी नगरो डियाने ॥ १४ ॥ वनिश्चेष्ठ सर्वात्मवारण ॥
परिशिक्कदेरवतां पवि मरण ॥ तैसामीश्चापबंधो नेपुर्ण ॥ बळक्षिणजा
ठालो ॥ १५ ॥ तरितेजनक जाम्भनिहनि ॥ वश्यहो ईल जरिशयनि ॥ ऐ
शिकरणिकराकोष्टी ॥ गाधविसनवि मनविटेत्तिवे ॥ १६ ॥ मगवीद्युत
जीकाप्रधान ॥ तोकापट्यवी धमा जोप्रविण ॥ तोलणमीनिमीन ॥
रघोत्तमान्वें द्विरकमका ॥ १७ ॥ गेंदाघवहस्तीन्वें कोदंउ ॥ मायाम
यनिमुनप्रवउ ॥ जेण्डित्तें चंहयहोयदुरवउ ॥ असत्यनवाटेसह
माहि ॥ १८ ॥ ऐसं औक तालकापत्ता ॥ परमसंतोषपानलाचीति ॥ ॥ २ ॥
जैसामयपीत्रषितपंथी ॥ तें शिंही वनदेरवीलें ॥ १९ ॥ आधीच जारकमिबहुरत ॥

॥आरणी॥

सासस्विराज्यजोलंप्राप्तम् ॥ कीश्चनेवभनजकस्मात् ॥ द्वौ हिंदेरिवलेधांवतां ॥
॥ २० ॥ कोनीं बोव्यदिरिवल्भाबद्वस ॥ परमसंतोषेवायस ॥ तैसाहर्षलालंके
श ॥ वचनेकतांतयाच्च ॥ २१ ॥ विदुजीवासलणेलंकापति ॥ तुंकेवक्त्रेव्रहस्य
ती ॥ तरीशिरधनुष्यशीघ्रगति ॥ उनियोईजरोकवना ॥ २२ ॥ कापट्यवेशी
वीयुजीका ॥ वस्वाभरणिगोरविलोक्य ॥ द्वितीमनिर्मालजीमधवा ॥ तर्कं
करितांनिणांस्य ॥ २३ ॥ इकेउजाधलंकनाथा ॥ प्रवेशलाजशोकवनात् ॥ तां
अधोवदेनतटस्य ॥ जगन्मातृदेलाभेस ॥ २४ ॥ शीतेजवक्तिउभारावण ॥
जैसाकमङ्गिमिपरौक्वण ॥ किहरणिजवक्तियेउन ॥ व्याघ्रउभाठाकल ॥
॥ २५ ॥ याउपरिराज्यसपाक्ष ॥ शित्तेपुटेंबोलेजमंगक्ष ॥ लणेतुवांधैर्यधरिले
सबका ॥ परित्तेनीर्फक्षजाठलें ॥ २६ ॥ मजलागींतुंजातांवरि ॥ तुझेत्रेविशि

(3A)

॥श्रीराम॥
॥३॥

(५)

लविनमंदोहरि॥ लुक्ष्मेजाइतलंकानगरि॥ वर्तविनजानकिये॥ २७॥ तुसियापति
सजालेमरणा॥ अधिभेकतेवर्तमाना॥ सागरिंघेतबांधोना॥ सुवेक्षिसर्वबाले
॥ २८॥ तोभामुचाप्रथानप्रहस्ता॥ बिशिलगेतासेनेस्थिति॥ रामसोमिचहोतेनि
द्रिस्ता॥ तेवर्षिधालाधातल्ला॥ २९॥ दृशया पतिच्छीरचमच॥ प्रहस्तं छहिलेताल्ला
का॥ सावक्षेक्षेधविशाका॥ सुवेक्षियेरमि येरेपात्ता॥ वधावाडोनहुमणा॥ तवेलो
जयोष्येसगतापकोना॥ आमुचावतुकीमषण॥ तोहितधिपतिला॥ ३०॥ सु
प्रिक्षणिष्ठंगद॥ याचाहिक्कल्ला॥ ३१॥ जांबुवंतवाणिमैद॥ यांचेजानुच
रणरवंडिले॥ ३२॥ नेवनिक्कजंजानिसुना॥ निजेलेगईकेलचुर्ण॥ वरकडहुम
कैटसेव्य॥ राष्ट्रसिंजाउनिगिक्कियेले॥ ३३॥ एतुजहिपतिलासमग्रा॥ मगको
ठेपक्षिवान्नरा॥ श्रेष्ठितस्विवाहलिपुरा॥ मेरेंगेलसागरा॥ ३४॥ हेजस्तुबस्यमनिवा॥

॥३॥

॥आ२४॥ जी

तरिजातांचयेईलप्रत्ययाशि ॥ तोंविद्युक्विगेशि ॥ शिरधेउनिपातला ॥
॥३५॥ तेणधनुव्यशिरत्तेवेळे ॥ रामवद्धमपुटेठेचिले ॥ मुरवराजसञ्जिसां
वेळे ॥ श्रोणितेमारवेलेकंठनाका ॥ कीरिटकुडलेमडिलवद्न ॥ सरक
नाशिकझळकतिदशन ॥ कार्यादिंकेशारजाकर्णनयन ॥ अरक्तेरवाकी
तेजकां ॥ ३६॥ असोदेवतांजन कनंदिनि ॥ मुर्छनायेउनिपेउधरणि ॥ की
जग्नीनेपउकमकणि ॥ जायकरापि नेजयापरि ॥ ३७॥ तवतेदशकटीर
पुच्छीत्रीया ॥ उठेमुर्छनांसांवरोनया ॥ हृदईशिरकमळधरोनियां ॥
शोककरित्तअपार ॥ ३८॥ अहोत्रामुवनपत्तिन्धीराणि ॥ शोकर्णविबुडाली
तेष्ठणी ॥ तोशोकसंगतांउलेलधरणि ॥ कविचीवाणिकुटीत ॥ ३९॥
लणेनाजीवनेत्रारघुनंदना ॥ स्मरिमीत्राजगन्मोहना ॥ अनंतगुणा

५८

ति

॥श्रीराम॥
॥४॥

(5)

जीसंपन्ना॥ कायर्णेसंकेलेहे॥ ४१॥ द्वैर्दशबर्तषेंपर्यंत॥ बनातश्चमलैबहुत॥ ॥ शीजय॥
 कोमङ्गचरणञ्जल्यता॥ कंटकहारञ्चरपले॥ ४२॥ मजकारणेश्चमलेत्तिकान
 नि॥ हाशिताहाशीतालणोमिला॥ त्रणपाषाणहदैधतनि॥ उधरिलेंरघु
 पत्तिने॥ ४३॥ मजकारणेवत्रिमारिला॥ सुर्यसुतमीत्रजोडिला॥ हनुमं
 तशुधीसधाडिला॥ त्रिकींबांधीलाजागर॥ ४४॥ सुवेकेत्रियेउनिसत्तरा॥
 वैरियांसयशदिधलेंञ्जपारा॥ कंसपविलाअवतार॥ भवपुरिमजलोटले॥ ४५॥
 रविकुरुवंशजेश्वरावणारि॥ लालोच्छामीजनककुमरि॥ अयोध्या
 धीशानुशीञ्जंतुरि॥ सोउविलमजआत्माकोण॥ ४६॥ मीपरदेत्रियेथं
 दीन॥ रघुवीरकोणासजाउद्धरण॥ सुर्यवौशाशिसंपुर्ण॥ उगलागला ॥ ४७॥
 यावरि॥ ४८॥ वाल्मीकिनिमाघ्यकेले॥ तेअवधेंचीबुडाले॥ जंबुकेंजाउनिमारिले॥

॥आ॒र॒४॥

पंचाननाशिलबलंहि ॥४८॥ अज्ञारवुरजीवनि ॥ कलशोऽङ्गवेगलाबुडेनि ॥ दी
पतेजेवासरमणी ॥ आउरवक्रोनिपउयेला ॥४९॥ कर्पुराच्येपुलकेकेवका ॥ ते
हीउभागीक्षिलावउवांनका ॥ जगभक्षकालोकाका ॥ सासभुतेगीक्षियेलं ॥५०
मःशकांच्योइन्द्रउपलागत्ता ॥ कवकाईपउलापवालता ॥ भुनकापशिंतत्त्वता ॥
वधीलकेसाभैरावता ॥५१॥ स्वयासुरजेंकारानि ॥ किसेसंब्रह्मांडगेलंजारा
क्रोनि ॥ कींपीःपलीकेचेउदरेंज राजा ॥ सीधुकेसासांठवाला ॥५२॥ लाग
तांमस्तिकेचापक्षवात ॥ भीया नोत नालाभोगीनाथ ॥ चीत्रींच्यासपैं
ञकस्मात ॥ अरणाबुजगीक्षियला ॥५३॥ तेसेंजघटितघउलेयेये ॥ रा
क्षिंजींकृलारघुनाथ ॥ कर्माचीगतिगठनबहुत ॥ किसाजधैकरुजा
तां ॥५४॥ भुधरजवत्तारलक्ष्मण ॥ किसारामासगेलाटाकुन ॥ तोअयो

(SA)

॥श्रीराम॥

॥५॥

(6)

घेसजाउन॥कायसंगोलभरताते॥५५॥ ताल्काळकौशल्याखजीकृप्राण॥होई
लकैकैचेसमाधान॥लागेलंसुर्यवंशाशीदुषण॥जंलेंरवंडणवोशाइ॥५६॥ ध॥
जैसारोककरिमंगकमगीनि॥सुरवावरिसुरतेठेउनि॥अश्रुधाराश्रवतिनयनि॥रवा
लेंअवनिभीजत॥५७॥ असोजानकिलाणद्वारवा॥होणारननुकेकर्मरेखा॥ल
रिमीथुकानाथजनका॥समानसजउसमि॥५८॥ आंतामहेरसुंइतुकेचकरिं॥
वन्होरोजरन्दुनिश्चकरि॥याइरसमतस्तस्तुकरि॥अग्नीगर्भप्रिवेशना॥५९॥
सत्वनसंडिजनकनंदिनि॥हुंरावरारिक्कलेमनि॥परमम्लानमुखहोउनि॥
गेलानिघानिसमेत॥६०॥ रावणगङ्गायाजनकनंदीनि॥बुडालिरोकार्णवजी ॥वीजय॥
वनि॥तवत्तेबीभीषणाचीरणि॥शरमाजालिरुप्लरूपै॥६१॥ तेष्णक्षणक्षणोये
उन॥घेतजानकिचेंद्रीनि॥संगोसककर्त्तमान॥जेलंकेतवर्त्तलेपै॥६२॥ ॥५॥

रघुपतिचें जें कांडीत॥ तेबीमीषणासकरेणं अगत्या॥ तेंशिचशौमोयेद्यं॥ संसाक्षितजानकि
रते॥ ६३॥ नानासुह्मरपें धरित॥ वाक्षसकापद्यहीजाणत॥ तोतुकेजानकीस्त्रुतकरि॥
क्षणक्षणयेउनियां॥ ६४॥ असोशारमालपोजानकीसी॥ मायेशोककांव्यर्थकरिसी॥ राम
सुरेवं जोहेसुरेकेसी॥ सकक्षेनेंसङ्गीत॥ ६५॥ हुजवश्यकरितांयेक्षणि॥ रावणेकेलो
छत्रीमकरणि॥ वरेवेंपोहेवीविदिवि॥ हुकिंदीशीधकिानीयां॥ ६६॥ जनकात्मजेलुझें
सयवरिं॥ चापेवेसलेंरावणाचंउर्यां॥ तेंतु इपतिनेंशउकरि॥ दीर्घवंउकरनिटाकोलें॥
॥ ६७॥ ताहुनिजउचापयेवेक्षे॥ प्रहुक्षें नेकेसेंआणीलें॥ छत्रीमनरमुंउनिर्मीलें॥
स्याजसारेवेंजाणपां॥ ६८॥ असेंशारमांजोंबोलत॥ तोधनुव्यशिरजोलं तुफ्स॥ जेसा
वाललागलां अकस्मात्॥ दीपजायविश्वेनि॥ ६९॥ कींजक्कुदजाक्कभीतरि॥ ईद्रधनु
व्यउमेक्षणभरि॥ तेमेंकोदंशउकरि॥ गुफ्सजालेंलेधवां॥ ७०॥ असोजानकीलपोशरमेप्रति॥

नशीनमा॒

२

५६५

(*)

धन्यवोमायतुज्जीमति॥ राक्षसांच्याकापट्ययुक्ती॥ तुजसमजलिसर्वही॥ ७१॥ मगजये
ध्यापतिविराणि॥ इ॒माजवङ्गिबोलाउनि॥ ह॒दै॒धरित्रीतिकरनि॥ ल॒णेस्वामिणीहे॒शि
ललंकेवी॥ ७२॥ तो॒देववाणिजालि॥ अकस्मात्॥ सुरवरपलोदृश्योध्यानाय॥ शि॒तेचा
आनंदजइता॒अंबरामाजीनसमाय॥ ७३॥ जसो॒ईकेडलंकापति॥ परमवींताक्रांतयेकं
ति॥ बोलतमंदो॒दरिप्रति॥ तेचीत्रोतपरित्रीजिभ॒४॥ मंदो॒दरीपरमसज्जानपपतिव्र
ताभाणिगुणसंपन्ना॒जीचेसौदर्भत्वाहालि॥ नमीनकतनातदस्ता॒७५॥ मथजेचे॒
ईचीतमना॒ध्योवेंजानकोचेहरनि॥ तो॒नदो॒दरित्रीदशवदना॒बोलताजालतेका॒ नवीजया॒
की॒७६॥ रावणलूणेशुभकल्याणि॒तुवाजाउनअशोकवनिआ॒बोधुनियांजनकने॒
दीनि॒मजशयनिवशकरिं॒७७॥ कुंपतित्रेमाजीमंडणा॒येवेढकार्यदेसाधुना॒ ५६५
तंचतेमंदो॒दरित्तुंस्यवदना॒बवस्यत्त्वणोनिउठली॒७८॥ चंद्रचिठाईककंका॒

Reproduced with the kind permission of
Shri Jayantilal Chandra Prakash Library,
Mandai, Dholka and the
Jayantilal Chandra Prakash Library

साहुनीमयजेवंविशेषसुरवा॥ अद्वा का वनाता का छिक॥ येति जालो ब्रह्मतित्रता॥ ७९
 तोत्रीजहालणे मुमीकुमारि॥ नवदर्शन आलीमंदोदरि॥ औसें औकनां अंतरिं परमसे
 तोषकी जगन्माता॥ ८०॥ सेवातुर्वरसोवरभराछिका॥ मयजासंकक्षंपकक छिका॥
 जैशिसीकुस्तीजान्हुविदेवा॥ नेदोज यग्नेत्रभीतें॥ ८१॥ प्रशीतिचोयाचरणवरि॥ मय
 जाजानमस्कारकरि॥ तोशितनेष्ठ नीष्ठउवारे॥ हृदृईलंगीलीशितीने॥ ८२॥ कींत्या
 शिताजाणीअशीता॥ येकेठाईमीनलतलतलता॥ ईदौराजाणीशीवकांता॥ येकिस
 येकस्तेटति॥ ८३॥ येकसन्धीयेकसरस्च॥ येकस्तुष्णायेकगोमति॥ येकमंदाकीनी
 येकभोगावति॥ मुत्तिवंतपातल्या॥ ८४॥ असोवरटकभावविरोना॥ स्वानंदसमुद्री
 जात्यालीना॥ चलुः घणीअंतः करण॥ वीरोनगलेंरधुनाधी॥ ८५॥ त्यावेदशाखीं
 व्याश्रुति॥ अत्मजे क्यारीयिति॥ तैशाआलीं गुनवैसती॥ ब्रह्मानंदे करोनियां॥ ८६॥

(८)

॥ श्रीराम तेजीदशकं दवं द्युप्रीया ॥ तीप्रतिबोले दशकं ठजाया ॥ लण्णाजी सुहीन लण्णो नि
यां ॥ दृग्निजोले माये दुःसं ॥ ८७ ॥ क्षणे कनिवात राहोनि ॥ मयजाबोले सुवचन ॥
लण्णसर्वो नुतिसमान ॥ रघुनंदन वृत्तसि ॥ ८८ ॥ अनेक तरंगये कसागर ॥ बहु
जां बेरं ये कधर ॥ अनेक मणीये कुमत्र ॥ तैसा रघु विरव्यापक असे ॥ ८९ ॥ ८९ ॥
ये कसुवण बहुत अकंकार ॥ बहुत उद्गते वकरे अने करसे ॥ बहुत मात्रकाये कवों कार ॥ तैसा रघु
विरव्यापक असे ॥ ९० ॥ बहुत धटक अने करसे ॥ बहुत अह्से रे ये कपुस्तक ॥ बहु बोल परि
मुख ये क ॥ रघुनाय कव्यापक तैसा ॥ ९१ ॥ ये कर शरि रजवयवथेका ॥ अपार ॥ बहुत पत्रे
ये कलत बर ॥ बहुजक चेरं ये कनिर ॥ तैसा रघु वरव्यापक असे ॥ ९२ ॥ ये वंचरान्वर सर्वो नु
त्रि ॥ ये कन्धीनों दं अयोध्या पति ॥ तरि दश मुरवास के लिया प्रिति एकाय स्थीती उणी हो ॥ ९३ ॥
सक क्षेत्रों अयोध्या धीश ॥ तरि वेग क्षाकं भाविशीलं के रा ॥ श्रीलदुराग नहि विशेष ॥ ९४ ॥

८७ ॥ ये

८८

॥ वीजय

९५ ॥

व्यर्थकांकरसितं संग ॥ १४८ मध्येन चाप्रश्नजै कोनी ॥ हांसोनी बोले जनैदिनी ॥ अमेदये क के
 च्यापपाणी ॥ सर्वाभुति भरला जैसे ॥ १५ ॥ सर्वही पठमठीं जाण ॥ काय को उन धाते लेंगगन ॥
 अमेदये करधुनंदन ॥ दुजेपण तेथं कैचै ॥ १६ ॥ माईक भास जगडंवर ॥ जैसा मुग जळींचा
 मीथ्यापुर ॥ वंध्याव छिंचेंक ठवीचीत्र ॥ मीथ्यामय लटकेची ॥ १७ ॥ स्वप्नीची संपदापुणी ॥
 कींजार शातीलधन ॥ कींईदीयंचित्तने ॥ १८ ॥ मीथ्यामय सर्वची ॥ १९ ॥ मीथ्याजिक कार
 येकसुवर्ण ॥ मीथ्यात्तरंगये क जीवन ॥ २० ॥ यकरधुनंदन ॥ तेथं रावण कोण कैचा ॥ ११
 ब्रलानंदस्वरामावर ॥ नदिसे दुजेपणाची ॥ २१ ॥ आतेथं शिताजाणी मंदोहरि ॥ मीथ्याभ्यास
 लटकाची ॥ २२ ॥ कैचीप्रथ्यी कैचंगगन ॥ कैचंजापल जपवन ॥ मीथ्यामय कैचंत्रीगुण ॥ ते
 थं रावण कोठं जोहे ॥ २३ ॥ जीतु केंथोर ब्रलात ॥ तैसे च जाकारा प्रन्यंतु ॥ तथं घटा काइशाने
 बउ ॥ वेग कैव्यर्थमावर ॥ २४ ॥ लैसानिर्विकार जगजैठी ॥ नवली लिहै लभानाच्यागाठी

(४)

अतिराम॥

११८॥

रा

९

तेष्यं कैचीरावणात्योभैर्टी॥ बात्य द्रीषीत्यजींकं ॥३॥ मयजात्लोणजानकीशि॥ सर्वव्या
पक अयोध्यावासी॥ कीवाजोहुये के दशी॥ जांगं मजपाशीनि श्वयें॥ यावरित्रीभुवनप
त्त्वीराणी॥ बोलचिदुल्लजननंदीनि॥ दुणीपुटीजपेगलींवीरोनी॥ तटस्तवाणीनिगमा
न्यी॥५॥ ध्यायध्यात्माध्यान॥ इयद्वात्मान॥ तुशंजमजकमजन॥ संगरावणलेय
कैचापद्धा॥ जेहीसेतेनाशिवंत॥ वस्तुये काजमेड घरामंदो हरिआणीशीतालेय॥ कोणीकेउप।
हानी॥६॥ दोरावरिदीस्त्रीवीरवर॥ स्थापुचि॥ रादम चोर॥ मकीकचाठाईरजृतसाचारमीथ्यावीकरजा
णपां॥७॥ मयकन्यासावधहोय॥ अहुयद्रीषी नेम वर्पाहु नजीर्वीकारवस्तुनीरामय॥ नहिनसाहुशब्द
जंथं॥८॥ वस्तुअव्यक्तमनाम॥ तेथैहौनम॥ नमामजैसेज्यासकम्लेवर्मी॥ आत्मारामलो
चीपै॥९॥ औसाजोजाकापरिषुण॥ त्योशिसमाधीजाणीवीश॥१॥ बोलपेंजाणीमौन्य॥ दोन्ही॥१०॥
याकीवीराली॥११॥ औसेंजगन्माताबोलत॥ मयजात्रलां नंदेउल्लत॥ समाधीग्रासुनिलदक्षा॥

॥आरू॥

विरालाहेत्सर्वहि॥१३॥ बोलेणं जाणिसंवादा रुंटो निखाला अभ्रेद॥ बोतकायिक
 ब्रह्मानंद॥ जानंदकंदजगदुरु॥१४॥ जानंदजीरउनिअंतरिं॥ सावधजालीमंदे
 इरि॥ जगन्मातिचेचरणधरि॥ सङ्कुद्भुंतरिंठोउनियं॥१५॥ लणसंशयनिरसलापुण॥
 १A
 धन्यधन्यजाजीचादीन॥ विदेहैकन्यचेचरण॥ वारंवारधरिमग॥१६॥ ब्रह्मानंद
 तोश्रीधर॥ धन्यतोदिवससाचार॥ संवादान्तो आभ्यविचार॥ सारासारहोयपै॥१७॥
 भागीरथिसर्वपवित्र॥ परिप्रयांगीमहे मायपार॥ तेसारामविजयपरिकर॥ मंदो
 ते दीरसंवादहा॥१८॥ सर्वत्रसुलभीम्.. परिप्रयं दरिसञ्जीकमहिमा॥ स्नानकरिनांका
 मर्कमी॥ पासुनिमुक्त होइजु॥१९॥ जसोशीतेचीजाइयेउनि॥ स्वधामगोलामयनंदी
 नि॥ गवणाप्रतिजाउनि॥ वर्तमानसांगत॥२०॥ तसुलोहावरिउदकपड़लें॥ तेमाघोरनीये
 येकवेळ॥ परिजानकीकदाकाळें॥ वश्यनकेतुलातें॥२१॥ मुगजकिं बुउल अगस्ती॥

॥ श्रीराम ॥

१०

तमकुपीपेडलगमस्ती ॥ हेंहिघडेलपरित्तेसनि ॥ वश्यनेकेचीतुलांति ॥ २१ ॥ जेगोर्छेने
होयअनर्थी ॥ आपुल्याकुक्काच्चाहोयघात ॥ औरियेबधीसपंडीता ॥ वश्यनहोतिको धा
क्कर्त्तई ॥ २२ ॥ हानिंचेटाकुनिसुवणी ॥ कावकेचियावेणा ॥ गोड़शक्करवोसंडुन ॥
रारवकोमुरवीघाकावि ॥ २३ ॥ मुतेक्षार्निसुदेर ॥ कापदरिंजराविंवपेर ॥ वोसंडुनि
रायकेकेआदेर ॥ अकिफिक्कोभक्षावी ॥ २४ ॥ यालांगीदीपेचबदना ॥ सोउविरामीची
अंगना ॥ कायावाचामनेजाणा ॥ २५ ॥ रदुनद्वारासणनिघावें ॥ २५ ॥ वीवशिकीहेपर
मशिता ॥ अनर्थकारकघोरसरिता ॥ तरिच्चतुर्सासकल्या ॥ बीजया
ण ॥ २६ ॥ परसत्तिचालभीलाश ॥ माहापुरुषासठेवणहोष ॥ बछवंतावरिषोधो ॥ २७ ॥
निकास ॥ मगअनर्थौशिउणेकाये ॥ २७ ॥ माहांसर्पउसांघुनि ॥ कैसानिजेलसुरव
शयनि ॥ बकेचगनहासलाविलाअग्नी ॥ मगअनर्धसिउणेकाय ॥ २८ ॥ परद्रव्याच्चजभीलाषा

॥३४॥

(१०८)

जाणोनित्राशनकरणेविष॥ करितांपरनिंदापरदेष॥ मगञ्जनर्थाशिउणंकाय॥ २९॥ परम
साधुवीभीषण॥ तुमचाजविवेकदेरवोन॥ अयोध्यापत्तिसगेलाशरण॥ जन्ममरणन्तु
कविलं॥ ३०॥ परमप्रतपिरघुनंदन॥ उदधीबरितारितारिलेपाषण॥ नाप्रतापनुली
जैणोन॥ देषबुधीकांधरिता॥ ३१॥ ऐशाराद्यसुभेकरन॥ मयजनेयुजिकारावण॥
मगप्रत्योतरहासेन॥ देताजालतेकाकि॥ ३२॥ प्रीयेदुंबोलशिवचन॥ मजमानेलं
बहुतगुण॥ परिपुरुषेयुत्तषार्थदाकुन्ब॥ तरिजिणंव्यर्थगोल॥ ३३॥ चीरंजवजालाबीषी
षण॥ प्रकृईतन्हीपावेलमरण॥ लोंबरहृत्तेषधरन॥ वैसनांकायसार्थक॥ ३४॥
कल्पपर्यतजाउनि॥ पउलाशारिरबंदिरवानि॥ यापुरुषार्थाशिशुभकत्याणि॥ मानी
कोणसंगपां॥ ३५॥ आदिपुरुषरघुनंदन॥ नैंसीजोणंसर्ववर्तमाना॥ तोमजशियुध्य
कामनाधरन॥ सागरउत्तरनआलोहे॥ ३६॥ त्यचीवासनानपुरविनां॥ कधीं

माधरिनघेशीता ॥ तरिसोजापुत्यापुत्रषार्थदाउनीराधवाजोंकीन ॥ ३७ ॥ जैसेंजैको
 नितेलवसरिं ॥ रावणचटलागोपुरिं ॥ जैसाबकाहुकपर्वतशीरवरि ॥ छुष्णावर्णउतर
 ला ॥ ३८ ॥ असोजालांयावरि ॥ रावणचटलागोपुरिं ॥ जैसाबकाहुकपर्वतशीरवरि ॥
 छुष्णावर्णजवतरला ॥ ३९ ॥ चपकेंउनीहुजडागके ॥ आंगीजकंकारमीरवला ॥ हाही
 छत्रत्तेवके ॥ मस्तकाकरिविराजत ॥ ४० ॥ नावहेत्रवकबहुत ॥ उपसोगदेनिसम
 योनीत ॥ इकउबीभीधणरामादिद्वारा ता ॥ नावणगोपुरिचटलाले ॥ ४१ ॥ श्रीरामल
 षेतेलवसरिं ॥ हापरमउचसुवेक्षणी ॥ जवयेवक्षधोनियांवरिएलंकापुरिपाहु
 चला ॥ ४२ ॥ जैसेंबोलतांजयोध्याधीश ॥ उठोलेतालकाम्हकीपुत्रष ॥ सुवेकाचको
 आसमास ॥ चटनिरिसवायुवेगें ॥ ४३ ॥ जैसेकनकाचिकावरि ॥ चटनिनिर्जरांच्याहु
 रि ॥ तैसेंवज्ञरेसीतेलवसरि ॥ अयोध्याविहारिचटत्तसे ॥ ४४ ॥ रघुपतिन्द्रेदोनिकर ॥

५वीजया

॥ ५१०॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com